कक्षा-12

पाठ-17 'अगर ये बोल पाते: जलियाँवाला बाग़'

तैयार व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

क) लगभग 60 शब्दों में उत्तर दें:-

1. जलियाँवाला बाग़ में सभा का आयोजन किस उद्देश्य से किया गया ?

उत्तर :13 अप्रैल 1919 की शाम के साढ़े चार बजे अमृतसर में जलियाँवाला बाग़ में एक विशाल जनसभा का आयोजन हुआ था। उस दिन रविवार था तथा वैशाखी का पवित्र त्योहार था। उस समय शहर की बहुत बुरी स्थिति थी। उस पर ही विचार करने के उद्देश्य से डॉ. गुरबा राय ने जलियाँवाला बाग़ में जनसभा का आयोजन किया। वे तो सिर्फ शांति स्थापना के साधनों की खोज करना चाहते थे।

2.ब्रिटिश फौज के बाग़ में प्रवेश का चित्रात्मक वर्णन करो।

उत्तर : डॉ. गुरबख्श राय के प्रस्ताव पेश करने के बाद वैद्य दुर्गादास ने दूसरे प्रस्ताव की दो पंक्तियां भी नहीं पढ़ीं थीं कि कुछ ही दूरी पर घुडसवार पुलिस, उसके पीछे फौजी गाड़ी में बैठा जनरल डायर, उसके पीछे मशीनगनें, तोप ले जाने वाली गाड़ियाँ और मार्च करती हुई ब्रिटिश फौजें सब चले आ रहे थे। सैनिकों के बूटों की आवाज़ें गूँज रही थीं। वे मोर्चा लगाने लगे और घुटने झुकाकर बन्दूकों में कारतूस भरने लगे।

3. जलियाँवाला बाग़ में गोलियों की बौछार से बचने के लिए लोगों ने क्या किया?

उत्तर : जलियाँवाला बाग़ में सैनिकों की गोलियों की बौछार से बचने के लिए लोगों में हाहाकार मच गई। कुछ लोग गोलियों से बचने के लिए ज़मीन पर लेट गए, किंतु सैनिकों ने उन्हें भूनकर रख दिया। लगभग 12 व्यक्ति एक वृक्ष के

पीछे छिप गए, किंतु सैनिकों ने एक-एक करके उन्हें भी मार डाला। कुछ भागते-भागते भीड़ में ही कुचले जा रहे थे। कुछ लोग बाग की दीवारों पर चढ़ने लगे। वे लाशों पर पैर रखकर दीवार पार करने की कोशिश कर रहे थे। किंतु सैनिकों ने उन्हें भी भून दिया। वहाँ बाग में एक कुआँ था। लोग घबराकर उसमें कूदने लग पड़े। अनेक लोग गिरकर कुचलकर मर गए।

ख) लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें:-

प्र.4. जलियाँवाला बाग़ में हुआ नरसंहार एक अमानवीय घटना थी। स्पष्ट करें।

उत्तर- निःसंदेह जलियाँवाला बाग़ में हुआ नरसंहार एक अमानवीय घटना थी। ऐसे अत्याचार की मिसाल शायद सारे संसार में नहीं है। 13 अप्रैल 1919 , दिन रविवार, वैसाखी के त्योहार वाले दिन शाम को अमृतसर में जलियाँवाला बाग़ में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा भारतीय जनता पर किए जाने वाले अत्याचार के विरोध में एक जनसभा बुलाई गई।लगभग पच्चीस हज़ार लोग इस जनसभा में शामिल थे। अभी सभा शुरू ही हुई थी कि ब्रिटिश फौजें वहाँ आ गईं ।जनरल डायर ने बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे, मासूम और शांति से सभा कर रहे लोगों पर गोलियाँ चलाने का हुक्म दे दिया। जान बचाने के लिए कोई ज़मीन पर लेटता, कोई दीवार फाँदने का प्रयास करता किंतु गोलियाँ ने किसी को भी नहीं बख़्शा। कुछ लोगों ने घबराकर वहाँ कुएँ में छलाँगें लगा दीं किन्तु हड़बड़ी में कुएँ में भी लोग गिरकर, कुचलकर मर गए। जब गोलियाँ चलनी बंद हो गईं तो वहाँ लाशों और घायलों के ढेर की स्थिति कही नहीं जा सकती। लोग अपने रिश्तेदारों परिचितों की तलाश कर रहे थे। सचमुच, ऐसे दर्दनाक व अमानवीय कुकृत्य की जितनी निंदा की जाए, कम है। इसी बर्बर हत्याकांड के कारण देश की आज़ादी की लड़ाई तेज़ हुई और अंतत: देश आज़ाद हो गया। हमें उस बलिदान को भूलना नहीं चाहिए और देश की पवित्र स्वाधीनता की रक्षा करनी चाहिए।

5.लेखक ने जलियाँवाला बाग़ में घायल हुए लोगों की तथा मृत लोगों के परिजनों की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है। स्पष्ट करें।

उत्तर : जलियाँवाला बाग़ में विशाल जनसभा में हज़ारों निहत्थे, बेकसूर तथा शांत लोगों पर जनरल डायर के हुक्म से ब्रिटिश सैनिकों ने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं थीं। वहाँ लोगों में हड़बड़ी मच गई। लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे किन्तु गोलियों ने उन्हें भूनकर रख दिया। इस नरसंहार में हज़ारों लोग मारे गए और अनेक घायल हो गए। उनकी स्थिति ब्यान करते हुये रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहाँ घायल हुए लोगों की चीखें-पुकारें, अनुभवी दर्द की सिसकियाँ तथा प्राणों को चीर देने वाली आहें - सब कुछ बहुत दर्दनाक था। एक सिक्ख युवक की आँतें बाहर बिखर रहीं थीं और वह मौत के लिए तरस रहा था। लेकिन किसी ने उसकी ओर नहीं देखा। घायलों के अतिरिक्त मृत लोगों के परिजनों की मनोदशा भी शोचनीय थी। कोई अपने भाई की लाश को पीठ पर लादे जा रहा था तो कोई अपने इकलौते बेटे की लाश के सामने बैठा रो रहा था। कहीं कोई स्त्री अपने पति की लाश के सामने विलाप कर रही थी। इस तरह असंख्य परिजन अपने रिश्तेदारों व परिचितों की लाशों के सामने रो रहे थे। लेखक ने सचमुच घायलों व मृत लोगों के परिजनों की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है।

ग) सप्रसंग व्याख्या करें :-

1.ऊपर उड़ता हुआ एक हवाई जहाज़-पाश्व सत्ता का प्रतीक, नीचे मैं चारों ओर से मंज़िलों, इमारतों से घिरा हुआ बाहर निकलने के एकमात्र मार्ग पर फौजी पहरा और ऊपर चबूतरे से गोली बरसाती फौज । काश, मैं गोलियों और जनता के बीच अड़ जाता।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित निबंध 'अगर ये बोल पाते: जलियाँवाला बाग़' में से ली गई हैं। इन पंक्तियों में ब्रिटिश फौजों द्वारा निर्दोष लोगों पर गोलियाँ बरसाने से जलियाँवाला बाग़' में व्यथित हृदय पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : जलियाँवाला बाग़ कहता है कि जब ब्रिटिश फौजें जनसभा में शामिल

शान्त तथा निहत्थे लोगों पर गोलियां बरसा रही थीं तब आकाश में अंग्रेज़ी हुकूमत की पाश्विकता का प्रतीक हवाई जहाज़ उड़ रहा था और मैं नीचे बहुमंज़िली इमारतों से घिरा हुआ था। बाहर निकलने का सिर्फ एक ही रास्ता था और उस पर फौजी पहरा था। फौजें चबूतरे से लोगों पर गोलियां बरसा रही थीं। जलियाँवाला बाग़ आगे कहता है कि काश, मैं गोलियों और जनता के बीच आकर निर्दोष लोगों को बचा पाता। किन्तु उसे अफसोस है कि वह तो जड़ बनकर उस भयानक दृश्य को देखता ही रह गया।

भावार्थः जलियाँवाला बाग़ को जहाँ शहीद लोगों के प्रति सहानुभूति है वहाँ अपनी जड़ता पर अफसोस भी है।

विशेष : 1.यहाँ ब्रिटिश सैनिकों की क्रूरता, निर्दोश तथा शान्त लोगों की दीनता तथा जलियाँवाला बाग़' की जड़ता का लेखक ने सुन्दर चित्रण किया है।

2.भाषा सरल, सरस एवं भावपूर्ण है।

3.आत्मपरक शैली का सफल प्रयोग है। शैली में प्रवाह है।

4.ऐतिहासिकता के चित्रण में चित्रात्मकता का गुण है।

2. मरते हुए व्यक्तियों की सिसकियाँ और आहें बता रही थीं कि जैसे चारों ओर मौत का साम्राज्य है। मेरा सारा शरीर गोलियों से छलनी हो चुका था, लेकिन मैं आसानी से मरने वाला नहीं था। काश, यदि मर जाता तो यह दृश्य तो नहीं देख पाता।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित निबंध 'अगर ये बोल पाते: जलियाँवाला बाग़' में से ली गई हैं। इन पंक्तियों में ब्रिटिश फौजों द्वारा निर्दोष लोगों पर गोलियाँ बरसाने से जलियाँवाला बाग़ में व्यथित हृदय पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : जलियाँवाला बाग़ कहता है कि ब्रिटिश फौज़ों द्वारा जनसभा में शामिल शान्त तथा निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसायी गयीं तो मरते हुए लोगों

की सिसकियाँ और उनकी आहें चारों और गूँज रहीं थीं। ऐसा लगता था कि जैसे चारों ओर मौत का शासन हो। वह आगे कहता है कि गोलियों से मेरा सारा शरीर छलनी हो गया था। मैं आसानी से मर भी तो नहीं सकता था, क्योंकि मुझे यह दर्दनाक दृश्य भी तो देखना था। काश, मैं मर जाता तो इस चीत्कारपूर्ण नरसंहार को न देख पाता।

भावार्थ : भाव यह है कि जलियाँवाला बाग़ के प्रांगण में यह नरसंहार हुआ जिसे भुला पाना असंभव है।

विशेष : 1 यहाँ जलियाँवाला बाग़ की संवेदनशीलता दृष्टव्य है।

2. भाषा सरल, सरस एवं भावपूर्ण है।

3 आत्मपरक शैली का सफल प्रयोग है। शैली में प्रवाह है।

4 ऐतिहासिकता के चित्रण में चित्रात्मकता का गुण है।

तैयार व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)

स्टेट रिसोर्स पर्सन

(हिंदी और पंजाबी)